अनुमोदित
2018-19

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विषय – इतिहास

सत्र – 2018–19

संकाय – समाज विज्ञान

(नियम, परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम)

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

एम.ए. – स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विषय – इतिहास

अकादमी सत्र 2016 – 2017

प्रथम सेमेस्टर

प्रथम प्रश्नपत्र – इतिहास की अवधारणा एवं लेखन विधियाँ

अधिकतम अंक – 100 | 5 क्रेडिट | उत्तीर्णांक – 40

(आंतरिक मूल्यांकन–30)

(बाह्य मूल्याकंन–70)

आवश्यकता :– इतिहास ज्ञान की वह शाखा हैं जिसका संबध व्यक्ति के सामाजिक तथा राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विकास में हैं यह वह विज्ञान है जो मानव के भूतकाल के क्रियाकलापों का वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध अध्ययन करता है। स्नातकोत्तर के विद्यार्थियो के लिये यह आवश्यक है कि वह इतिहास लेखन की विभिन्न अवधारणाओं एवं उसके अन्य विषयो के साथ संबधो का विस्तृत अध्ययन करें।

उद्देश्य :– (1) विद्यार्थी इतिहास का अन्य विषयों के साथ संबध को समझ सकेंगे।

(2)इतिहास की अवधारणा एवं लेखन विधियो से परिचित हो सकेंगे।

(3) इतिहास लेखन में विभिन्न विचारधाराओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम

इकाई 1 – इतिहास का अर्थ, विस्तार तथा दूसरे मानवशास्त्रीय विषयों – पुरातत्व, समाजशास्त्र, नृतत्वशास्त्र, राजनीतिविज्ञान, भूगोल तथा विज्ञान से संबध

इकाई 2 – इतिहास लेखन के स्रोत, साक्ष्य की प्रकृति और उनका आलोचनात्मक विश्लेषण, इतिहास लेखन में तथ्यों की व्याख्या का महत्व, भारतीय इतिहास लेखन में पुराणों की परम्परा

इकाई 3 – यूनानी इतिहास लेखन की प्रमुख विशेषताएं – हेरोडोटस एवं थ्यूसेड़ायडिस, रोमन इतिहास दर्शन के प्रमुख लक्षण – लेवी तथा टेसिटस के संदर्भ में, मध्यकालीन इतिहास लेखन – संत आगस्टाइन, इब्नखल्दून, अल्बरुनी एवं अबुलफजल

इकाई 4 – इतिहास लेखन पर वैज्ञानिक क्रांति का प्रभाव – रानें डेस्कार्ट प्रतिरोधी कार्थीजियन विचार, विको तथा रांके की प्रस्थापनाएं

इकाई 5 – इतिहास लेखन में हीगल तथा मार्क्स की विचारधारा का विश्लेषण

3/5/18

महत्व :– स्नातकोत्तर स्तर के इतिहास के विद्यार्थी के लिये यह आवश्यक है कि वह भारत के इतिहास की अवधारणा लेखन विधियाँ एवं विचारधाराओं का आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकें, इसी निमित्त इतिहास के इस प्रश्न पत्र का महत्व है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

गोविंदचंद्र पाण्डे(सं.)	–	इतिहास स्वरूप एवं सिद्धांत
	–	मीनिंग एंड प्रोसिस ऑफ कल्चर
वासुदेवशरण अग्रवाल	–	इतिहास दर्शन
बुद्धप्रकाश	–	इतिहास दर्शन
बी.एस.पाठक	–	एन्शियेन्ट हिस्टोरियन्स ऑफ इंडिया
सी.एच.फिलिप्स	–	हिस्टोरियन्स ऑफ इंडिया, पाकिस्तान एंड सीलोन
एस.पी.सेन(सं.)	–	हिस्टोरियन्स एंड हिस्टोरियोग्राफी इन मार्डन इंडिया
आर.जी.कालिंगहुड	–	दि आइडिया ऑफ हिस्ट्री
सी.वेहम.	–	दि ट्रूथ ऑफ हिस्ट्री
सतीश के बजाज	–	ए टैक्ट बुक ऑफ हिस्टिरियोग्राफी

31/5/18

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

एम.ए. – स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विषय – इतिहास

अकादमी सत्र 2016 – 2017

प्रथम सेमेस्टर

द्वितीय प्रश्नपत्र – भारत का इतिहास (प्रारंभ से 550 ई.)

अधिकतम अंक – 100 (आंतरिक मूल्यांकन–30) (बाह्य मूल्याकंन–70) | 5 क्रेडिट | उत्तीर्णांक – 40

आवश्यकता :– प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन सभी विद्यार्थियो के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। या इसलिए भी आवश्यक हैं क्योंकि प्राचीन भारत के लोगो ने सभी क्षेत्रो में विकास किया था। जबकि दुनिया के अन्य भागों में असभ्यता एवं जंगली व्यवस्थाएँ थी। अतः प्राचीन भारत के गौरवशाली इतिहास को पढ़ाना हमारा परम कर्त्तव्य हैं।

उद्देश्य :– (1) विद्यार्थी, सैन्धव सभ्यता के प्रमुख केन्द्रो तथा महाजनपद युग का अध्ययन कर सकेंगे।

(2) विद्यार्थी सिकन्दर के आक्रमण एवं भारत में विभिन्न वंशो के उद्भव और विकास से अवगत हो सकेंगे।

पाठ्यक्रम

इकाई 1 – सैन्धव– सरस्वती सभ्यता–प्रमुख केंद्र, तिथि, नगर नियोजन, कला एवं स्थापत्य, वैदिक काल स्रोत, तिथि, राजनैतिक संरचना एवं संस्थाएं, महाजनपदयुग – राज्यतंत्र तथा गणतंत्र।

इकाई 2 – सिकन्दर का आक्रमण, नंद एवं मौर्य वंश, मौर्य प्रशासन, शुंग तथा हिंद यवन।

इकाई 3 – सातवाहन, कलिंग का खारवेल, शक तथा कुषाण।

इकाई 4 – गुप्तों का उद्भव – चंद्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त तथा रामगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त स्कंदगुप्त, गुप्त साम्राज्य का पतन, गुप्त प्रशासन।

इकाई 5 – वाकाटक, हूण, दशपुर के औलिकर।

महत्व :– प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन करने के पश्चात विद्यार्थी में यह विश्वास उत्पन्न किया जा सकता है कि जैसे भारत पहले विश्वगुरू था आज भी बन सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

विमल चंद्र पाण्डेय	–	प्राचीन भारत भाग–1
	–	प्राचीन भारत भाग–2
एस.आर.वर्मा	–	प्राचीन भारत
डी.एन.झा एव के.एम.श्रीमाली	–	प्राचीन भारत का इतिहास
आर.एस.शर्मा	–	प्राचीन भारत के राजनैतिक विचार एवं संस्थाएं
रोमिला थापर	–	भारत का इतिहास भाग–1
आर.पी.त्रिपाठी	–	प्राचीन भारत का इतिहास
हेमचंद्र रायचौधरी	–	प्राचीन भारत का इतिहास
सत्यनारायण दुबे	–	प्राचीन भारत का इतिहास
बी.एन.लुनिया	–	प्राचीन भारत
राधेश्याम एवं सत्येंद्रशरण	–	प्राचीन भारत का इतिहास
कैलाश चंद्र जैन	–	प्राचीन भारत सामाजिक तथा आर्थिक संस्थाएं
आर.पी.दुबे	–	प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास
राधाकुमुद मुकर्जी	–	हिंदू सभ्यता
उदयनारायण राय	–	गुप्त सम्राट और उनका काल
श्रीराम गोयल	–	मगध साम्राज्य का इतिहास
	–	गुप्त साम्राज्य का इतिहास
	–	हिस्ट्री इम्पीरियल गुप्त

3/5/18

(10)

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

एम.ए. – स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विषय – इतिहास

अकादमी सत्र 2016 – 2017

प्रथम सेमेस्टर

तृतीय प्रश्नपत्र – प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास

अधिकतम अंक – 100 | 5 क्रेडिट | उत्तीर्णांक – 40

(आंतरिक मूल्यांकन–30)

(बाह्य मूल्याकंन–70)

आवश्यकता :– प्राचीन भारत के वैदिक साहित्य एवं ग्रन्थों से पता चलता है कि भारत का सामाजिक, आर्थिक इतिहास कितना समृद्धशाली था एवं नारी का स्थान कितना ऊँचा था इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम इतिहास के विद्यार्थियों को इस गौरवशाली संस्कृति का अध्ययन कराये।

उद्देश्य :–

(1) विद्यार्थी प्राचीन भारतीय साहित्य का अध्ययन कर सकेंगे एवं सामाजिक व्यवस्था को जान सकेंगे।

(2) प्राचीन भारत में नारी के स्थान के बारें में अध्ययन कर सकेंगे।

(3) प्राचीन भारत के प्रमुख शिक्षा केन्द्रों एवं शिक्षा प्रणालियों से अवगत हो सकेंगें।

इकाई 1 – सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास की रूपरेखा के प्रमुख स्रोत – वैदिक साहित्य, बौद्ध साहित्य, अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र–मनु एवं याज्ञवल्क्य स्मृतियाँ।

इकाई 2 – वर्ण एवं जातियों का उद्भव एवं विकास, सामाजिक स्तर का आर्थिक आधार, दास प्रथा का सामाजिक प्रभाव।

इकाई 3 – भारतीय प्राचीन समाज में आश्रम, पुरुषार्थ तथा संस्कारों का स्थान एवं महत्व

इकाई 4 – प्राचीन भारतीय समाज में नारी का स्थान – सामाजिक, पारिवारिक, विवाह, धार्मिक एवं आर्थिक स्थिति के परिप्रेक्ष्य में।

इकाई 5 – प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के आदर्श एवं लक्ष्य, परंपरागत ब्राह्मण शिक्षा प्रणाली और उसके मुख्य केंद्र, बौद्ध शिक्षा प्रणाली और उसके मुख्य केंद्र।

31/5/18

महत्व :— भारत के सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास के विस्तृत अध्ययन के पश्चात विद्यार्थी कुछ प्रमुख विषयों का विद्यावारिधी उपाधि हेतु चयन कर सकते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :—

अल्तेकर, ए.एस. — पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिंदू सिविलाइजेशन

वाशम, ए.एल. — ए कल्चरल हिस्ट्री ऑफ इंडिया

चक्रधर एच.सी. — सोशल लाइफ इन एनशियण्ट इंडिया

शिवकुमार गुप्त(सं.) — प्राचीन भारतीय समाज का इतिहास

चट्टोपाध्याय एस. — सोशल लाइफ इन एनशियण्ट इंडिया

काणे पी.वी. — धर्मशास्त्र का इतिहास (खण्ड 2—3)

जे.ए.मिश्र — प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास

राजबलि पाण्डेय — हिंदू संस्कार

प्रभु पी.एन. — हिंदू सोशल ऑर्गेनाइजेशन

आर.एस.शर्मा — पर्सपेक्टिव इन दि सोशल एंड इकनोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया

रणवीर चक्रवर्ती — ट्रेड इन अर्ली इंडिया

चंपकलक्ष्मी आर. — ट्रेड, आइडियोलॉजी एंड अर्बनाइजेशन : साउथ इंडिया (300 ई.पू. से 1300 ई.)

लल्लनजी गोपाल — दि इकोनॉमिक लाइफ इन नार्थ इंडिया

मैती, एस.के. — इकोनॉमिक लाइफ इन नार्थ इंडिया, इन दि गुप्त पीरियड

बलराम श्रीवास्तव — ट्रेड एंड कामर्स इन एन्शियंट इंडिया

खरे एम.एन. — एग्रेरियन एंड फिस्कल इकोनॉमी इन मौर्यन एंड पोस्ट मोर्यन एज

[illegible] डी.एन. — रेवेन्यू सिस्टम इन पोस्ट मौर्यन एंड गुप्ता टाइम्स

3/5/18

(12)

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

एम.ए. – स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विषय – इतिहास

अकादमी सत्र 2016 – 2017

प्रथम सेमेस्टर

चतुर्थ प्रश्नपत्र – प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन

अधिकतम अंक – 100 | 5 क्रेडिट | उत्तीर्णांक – 40

(आंतरिक मूल्यांकन–30)

(बाह्य मूल्याकंन–70)

आवश्यकता :– प्राचीन भारत के इतिहास का गहन अध्ययन करने हेतु यह आवश्यक है कि विद्यार्थी प्राचीन भारतीय षड़दर्शन, धर्म की विभिन्न शाखाओं एवं प्रमुख भक्ति आन्दोलनो के विषय मे भी सम्पूर्ण जानकारी रखें। इस दृष्टि से यह प्रश्नपत्र अत्यन्त ही आवश्यक है।

उद्देश्य :–

(1) विद्यार्थी प्राचीन धर्म तथा दर्शन की प्रमुख विशेषताओं को समझ पायेंगे।

(2) विद्यार्थी शैवमत, वैष्णवमत एवं भक्ति आन्दोलनों का अध्ययन कर सकेंगें।

(3) भारतीय षडदर्शनों की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम

इकाई 1 – पूर्व तथा उत्तर वैदिक कालीन धर्म, उत्तर वैदिक कालीन उपनिषदीयचिंतन।

इकाई 2 – छठी शताब्दी ई.पू. की वैचारिक कांति।
बौद्ध धर्म का उदभव तथा प्रमुख सिद्धान्त।
जैन धर्म का उदभव तथा प्रमुख सिद्धान्त।

इकाई 3 – वैष्णव धर्म का उदभव तथा विकास –
रामायण
महाभारत तथा
भगवदगीता

इकाई 4 – पांचरात्र सम्प्रदाय ।
पुराण।
दक्षिण भारतीय भक्ति आंदोलन – आड़वार तथा नायनार सन्त।

इकाई 5 – शैव धर्म का उदभव तथा विकास, लकुलीश पाशुपत सम्प्रदाय, कापालिक तथा शैव सिद्धान्त शाक्त धर्म का उदभव तथा विकास।

3/5/18

महत्व :– प्राचीन भारतीय धर्म का ज्ञान इतिहास के विद्यार्थी के लिए बहुत आवश्यक है। क्योंकि भारतीय कला संस्कृति आदि सभी विधाएँ कही ना कही धर्म से प्रभावित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

गोविंदचंद्र पाण्डे	–	वैदिक संस्कृति
हिरियन्ना	–	एशेन्शियल ऑन इंडियन फिलासफी
	–	भारतीय दर्शन के मूल तत्व
एस.एन.दासगुप्ता	–	भारतीय दर्शन (चार खण्ड)
शिवकुमार गुप्त (सं.)	–	भारतीय चिंतन का इतिहास
यदुवंशी	–	शैवमत
शेरवास्की	–	सैन्ट्रल कन्शेप्शन ऑफ बुद्धिज्म : दि माध्यमिका सिस्टम
इ.कोन्जे	–	बुद्धिस्ट थॉट इन इंडिया
टी.आर.वी.मूर्ति	–	दि सैन्ट्रल फिलासफी ऑफ बुद्धिज्म : दि माध्यमिका सिस्टम
गोविंदचंद्र पाण्डे	–	स्टेडीज इन दि ओरिजिन्स ऑफ बुद्धिज्म
	–	श्रमण ट्रेडीशन : इट्स हिस्ट्री एंड कंट्रीव्यूशन टू इंडियन कल्चर
टी.महादेवन	–	दि फिलोसफी ऑफ अद्वैत
अरविंदो	–	ऐसेज ऑन द गीता
हरिदास भट्टाचार्य(सं.)	–	दि कल्चरल हेरिटेज ऑफ इंडिया (पाँच खण्ड) केवल तत्संबंधी अंश
अयंगर, एस.के.	–	सम कंट्रिव्यूशन ऑफ साऊथ इंडिया टू इंडियन

3/5/18

9/12/17